नवरात्रि
17 अक्टूबर 2020 से
24 अक्टूबर तक

आप स्वयं यों करें नवरात्रि पूजन

हम सभी जानते हैं कि कहीं न कहीं ऐसी कोई शक्ति अवश्य है, जो सम्पूर्ण विश्व का संचालन करती है। हम यह मान कर चलते हैं कि सिद्धि अवश्य है और कठोर साधना के बाद अवतरित होती है। व्यक्ति जब पृथ्वी पर जन्म लेता है तो वह एक कौरे कागज की तरह होता है और जिसके माथे पर कुछ लिखा होता है तो वह पूर्व जन्म के किये कर्म, जो कि उसे इस जन्म में भोगने होते हैं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र या उपासना-आराधना, भक्ति आदि के द्वारा पूर्व जन्म के पापों से मुक्ति अवश्य मिलती है और आगे आने वाला जन्म सुधर जाता है। सिद्धि के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है माया। यदि कोई इस माया के जाल को तोड़ सकता है तो वह अवश्य सिद्धि के दर्शन कर सकता है। सिद्धि सफलता की प्रतीक है और मानव समाज के कल्याण के लिए इस पृथ्वी पर अवतरित है क्योंकि हमें अपने सोये हुए भाग्य को जगाना है, और उस अन्धकार को दूर भगाना है जो हमारे चारों और फैला हुआ है, हमें उन जटिल समस्याओं से मुक्ति लेनी है, जो हमारा पीछा नहीं छोड़ रही।

जो साधक ''दुर्गा शप्तशती'' का पूरा पाठ नहीं कर पायें या संभव नहीं हो वे व्यक्ति ''तान्त्रोक्त रात्रि सूक्तम'' पश्चात् ''शक्रादिस्तुति'' एवं अन्त में ''तान्त्रोक्त देवी सूक्तम'' का पाठ करें। ऐसा करने पर भी उन्हें ''दुर्गा शप्तशती'' के पाठ जितना ही फल प्राप्त होगा।

इसका एक ही मार्ग है हमें उस शक्ति की शरण में जाना होगा जो हमारी इन समस्याओं का समाधान कर सकें और वह शक्ति इस संसार में केवल मां की साधना ही है। शक्ति साधना का प्रथम रूप दुर्गा ही मानी जाती हैं। विश्व में किसी न किसी रूप में देवी की पूजा शक्ति-रूप में प्रचलित रही है, और वह मातृ देवता के रूप में अधिक प्रतिष्ठित हैं। वह शक्ति दुर्गा हो, चाहे काली हो, वह परमाराध्या, ब्रह्ममयी महाशक्ति हैं जो विश्व चेतना के रूप में सर्वत्र व्याप्त हैं, वहीं विश्व की सृजनात्मक शक्ति मानी जाती हैं।

प्रायः जन साधारण मन में दबी हुई इच्छा रखता है कि वह भी अपने घर में दुर्गा पूजन करवाये या स्वयं करें। लेकिन पूर्ण विधि-विधान या जानकारी के अभाव में उसकी इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती। हर व्यक्ति चाह कर भी पंडित से पूजा नहीं करवा पाता, या पंडितजी उपलब्ध नहीं हो पाते।

आप निराश न हों, मन में शान्ति एवं धैर्य रखें। यदि आपको माँ के प्रति अगाध श्रद्धा एवं भक्ति है तो आप निश्चिय ही स्वयं पूजा कर उनकी कृपा प्राप्त कर सकते हैं। हम विशेष रूप से आपके लिए ही यह सरल विधान प्रस्तुत कर रहे हैं।

इस वर्ष शारदीय नवरात्रि दिनांक 17 अक्टूबर, 2020 शनिवार से प्रारम्भ हो रहे है। इस दिन चित्रा नक्षत्र है। घट स्थापना का शुभ मुहूर्त्त प्रातः 6 बजकर 25 मिनिट से 10 बजकर 12 मिनिट तक है। तत्पश्चात् घटस्थापना का अभिजित मुहूर्त्त 11 बजकर 44 मिनिट से 12 बजकर 29 मिनिट तक है। अतः शास्त्र मतानुसार प्रातःकाल से ही माता दुर्गा की उपासना में लग जाना चाहिए।

सर्वप्रथम घर में कहाँ पूजन करेंगे स्थान निश्चित करें। पूजा करते समय आपका मुँह पूर्व दिशा में हो। आसन लाल अथवा सफेद कम्बल का हो तो श्रेष्ठ है। बाघ चर्म या मृग चर्म हो तो वह भी श्रेष्ठ है।

आप जो भी मुहूर्त लें सर्वप्रथम माँ की तस्वीर या मूर्ति के आगे दीपक एवं अगरबत्ती-धूप आदि करें। गणपति का पूजन कर कार्य आरम्भ करें। ''ऊँ गं गणपतये नमः'' इस मंत्र से गणपति का पूजन, स्नान, पंचामृत से स्नान, गंधोदक (चंदन) स्नान, शुद्धोदक (जल) से स्नान करवाकर केशर का तिलक करें, फिर कुंकुम का तिलक करें। मौली, कलावा (नाड़ाछड़ी) दो बार चढ़ायें। पुष्प अर्पित करें। दूब चढ़ायें। अबीर-गुलाल आदि चढ़ायें। पंचमेवा, लड्डू या जो भी प्रसाद आप भोग रूप में अर्पित करना चाहे करें। पान, लौंग, इलायची, सुपारी भेंट कर दक्षिणा चढ़ायें। कर्पूर की आरती करें।

फिर भैरव को नमस्कार करें। गुरू पूजन इसी प्रकार करें। फिर सूर्य पूजन करें। देवी की तस्वीर या मूर्ति या त्रिशूल के दाहिनी और तेल का और बांयी तरफ घी का अखण्ड दीपक जलायें। फिर गणपति पूजन वाले क्रम से ही ''ॐ दुं दुर्गायै नमः'' मंत्र से देवी का पूजन करें। इसमें देवी को दूब नहीं चढ़ायें।

इसके बाद एक चौकी पर देवी के सम्मुख या फिर ईशान कोण में नीचे चावल या गेंहूँ की ढ़ेरी बनाकर उस पर तांबे या मिट्टी का कलश स्थापित करें। कलश में सिक्का, सुपारी, गंगाजल, शुद्ध जल, सर्वोषधी (हवन सामग्री में से एक चुटकी) कमल गट्टा, हल्दी की एक साबूत गांठ व आम, कनेर, अशोक, पीपल या खाने के पान में से जो भी मिल जाये पांच पान, दूब एवं कुशा कलश में डाले। कलश में वरूण देव का आह्वान करें। कलश पर मौली, कलावा बांधे। कलश के ऊपर पूर्णपात्र (एक प्लेट या कटोरी में चावल भरकर) कलश पर स्थापित करें। फिर एक नारियल के उपर लाल कपड़ा या चूनरी बांधकर पूर्णपात्र पर स्थापित कर दें। नारियल का मुँह अपनी और रखें। नारियल पर पुष्प एवं पुष्प माला चढ़ायें।

कलश पर कुंकुम से स्वास्तिक बनायें। फिर पहले बताये क्रम अनुसार ही कलश का पूजन भी ''ॐ दुं दुर्गायै नमः'' मंत्र से करें। फिर एक या दो मिट्टी के कुल्हड़ में अच्छी बालू रेत भरें उसमें थोड़ा सा गोबर, गौमूत्र आदि छिटककर उसमें अच्छे जौ बो दें। फिर पानी से उसे सींचें। उन कुल्हड़ों का भी पूजन करें।

यदि आप कर सकें तो दुर्गा चालिसा का पाठ करें अथवा किसी भी माला से ''ॐ दुं दुर्गायै नमः'' का जाप करें। प्रतिदिन क्रम से 1, 5, 7, 9, 11 या जितनी भी इच्छा हो माला जपें। जैसी शक्ति और समय हो जप करें। फिर प्रातः कर्पूर सहित घी के दीपक से आरती करें। सायंकाल भी इसी प्रकार आरती करें।

इस प्रकार नौ दिन तक आराधना करने से मनोकामना पूर्ण होती है देवी की शक्ति से वह निर्भय रहता है।

दशहरे के दिन सायंकाल कलश का विसर्जन जल में करें और ज्वारों का भी विसर्जन करें।

नौवे दिन दोपहर को नौ कुमारी कन्याओं को व 2 बालकों को भोजन करवा कर उन्हें फल व दक्षिणा देकर विदा करें।

नवरात्रि के दसवें दिन (विजय दशमी) को समस्त पूजन सामग्री, यदि हवन किया हो तो हवन सामग्री आदि भी किसी नदी, तालाब आदि में विसर्जन कर दें।

इस प्रकार सर्व साधारण भी अपने घर में दुर्गा पूजन का आनन्द ले सकता है।

आरती किस प्रकार करनी चाहिए?

शास्त्रों में लिखा है कि जिस घर में नित्य आरती गायी जाती हो, नित्य जहाँ शंख, घंटा आदि की ध्वनि सुनाई देती हो वहां पर दरिद्रता नहीं आ पाती। क्योंकि इन सभी के कारण लक्ष्मी का वहाँ आगमन होता है और जहाँ लक्ष्मी रहती हो वहाँ पर उसकी बहन दरिद्रा नहीं रह सकती।

प्रायः कोई भी व्यक्ति जानकारी के अभाव में मन मर्जी के अनुसार आरती उतारता रहता है जबकि देवताओं के सम्मुख चौदह बार आरती उतारने का विधान है- चार बार चरणों पर से, दो बार नाभि पर से, एक बार मुख पर से, सात बार पूरे शरीर पर से। इस प्रकार चौदह बार आरती की जाती है।

जहाँ तक हो सके विषम संख्या अर्थात् 1, 5, 7 बत्तियाँ बनाकर ही आरती की जानी चाहिये।

नवरात्री सफल हुई या नहीं ऐसे जानें

नवरात्रि के समय पर जो व्यक्ति नवरात्रि व्रत एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं, वे लोग मिट्टी के कुल्हड़ में जौ बो देते हैं। तीसरे दिन उसमें अंकुर फूट जाते हैं। इन अंकुरित जौ को बहुत ही शुभ माना जाता है और इनके द्वारा पूरे वर्ष भर की भविष्यवाणी की जाती है। साधना सफल हुई या नहीं इस बात की भी पूर्ण जानकारी हो जाती है।

यदि अंकुरित जौ में काले रंग के अंकुर उगते हैं तो उस वर्ष अकाल पड़ेगा तथा निर्धनता बढ़ेगी। धुंए के समान रंग वाले जौ उगते हैं तो परिवार में कलह रहेगा। अगर जौ नहीं उगते हैं तो उस वर्ष 'जन-हानि' होगी, कार्यो में बाधा अथवा आकस्मिक मृत्यु होगी। नीले रंग के अंकुर अकाल को इंगित करते हैं। यदि रक्त वर्ण के अंकुर उगते है तो रोग व्याधि या शत्रु भय रहेगा। हरा रंग धन-धान्य का सूचक होगा। सफेद रंग अत्यन्त शुभकारी माना जाता है और साधक की अभिष्ट सिद्धि की और संकेत करता है। आधे हरे व आधे पीले अंकूर पहले काम बनने और फिर हानि होने की ओर संकेत करते हैं।

♦♦♦

''महामृत्युंजय यंत्र मुद्रिका''

समस्त रोगों, आकस्मिक दुर्घटनाओं के लिये महामृत्युंजय यंत्र का लॉकेट व मुद्रिका

क्या आप जानते हैं कि जब मृत्यु का समय नहीं हो अर्थात् आपकी जन्म कुण्डली में मृत्यु का योग उस समय नहीं हो लेकिन फिर भी मृत्यु होने पर अकाल मृत्यु कहा जाता है अर्थात् हर कदम पर मृत्यु सामने खड़ी है। हर दिन, हर समय, दिल में एक डर सा लगा रहता है कि इस भाग-दौड़ की जिन्दगी में मेरी संतान को, मेरे सुहाग को, मेरे अपनों को कुछ हो न जाये, कहीं कोई दुर्घटना न घट जाए। थोड़ी-सी देर होते ही मन आशंका से भर जाता है और आँखें प्रतिक्षारत हो जाती है। हर पल, हर क्षण एक भय सा लगा रहता है कि क्या पता कब क्या हो जाये, कहीं कोई अनर्थ न हो जाये, कोई दुर्घटना, अनहोनी न हो जाये।

भगवान महामृत्युंजय शिव का रूप हैं, जिनकी कृपा से समस्त रोगों, शोक, आकस्मिक दुर्घटनाओं, असामायिक मृत्यु आदि के योगों पर पूर्ण विजय प्राप्त कर सकता हैं। यदि आप भी चाहते हैं कि आपके घर-परिवार में कोई अकाल मृत्यु का ग्रास ना बने, आपके पारिवारिक सदस्यों का स्वास्थ्य उत्तम रहे, वे सदा प्रसन्न रहें, किसी दुर्घटना का शिकार ना हों, भयमुक्त रहें तो आपको भी महामृत्युंजय मुद्रिका अवश्य धारण करनी चाहिए।

महामृत्युंजय यंत्र न्यौछावर-2100/-अंगूठी लॉकेट-1500/-

सम्पर्क करें:- विश्व तंत्र ज्योतिष

प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास जोधपुर-342001 (राज.)
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.kamashrimali.com

आप सीधे ही 'विश्व तंत्र-ज्योतिष' के बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।
आपकी सुविधा के लिये बैंक एकाउन्ट नम्बर इस प्रकार हैं
STATE BANK OF INDIA A/C NO. 100-563-410-66
(All Amount Payble at Jodhpur Account)